## पद १२३

(राग: खमाज जिल्हा - ताल: धुमाळी)

गुरुज्ञानाचें हें वर्म। सहज ब्रह्मची आपण।।१।। वृत्ती उसळली मावळली। साक्षि तुम्हां कळों आली।।२।। भाव भक्ति रागद्वेष।

तुम्ही ज्ञाते सावकाश।।३।। देह मन जड चंचल। तुम्ही ज्ञाते हो निश्चल।।४।। बोध मार्तांड हा सुगम। साक्षी तुम्ही परब्रह्म।।५।।